MP Board Class 9th Hindi Navneet Solutions पद्य Chapter 7 सामाजिक समरसता

बोध प्रश्न

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.
कृष्ण और सुदामा कौन थे?
उत्तर:
कृष्ण और सुदामा बाल्यावस्था के घनिष्ठ मित्र थे।

प्रश्न 2.
सुदामा की पत्नी ने उन्हें क्या सलाह दी?
उत्तर:
सुदामा की पत्नी ने सुदामा को यह सलाह दी कि तुम्हारे बचपन के मित्र श्रीकृष्ण द्वारिका के राजा हैं अतः इस विपत्ति में तुम उनके पास चले जाओ, वे तुम्हारी सहायता करेंगे।

प्रश्न 3.
शबरी के आश्रम में कौन आये थे?
उत्तर:
शबरी के आश्रम में राम और लक्ष्मण दोनों भाई आये थे।

प्रश्न 4.
शबरी ने राम को प्रेम सहित खाने को क्या दिया?
उत्तर:
शबरी ने राम को प्रेम सहित कन्द, मूल एवं फल खाने को दिए।

प्रश्न 5.
शबरी के मुँह से शब्द क्यों नहीं निकल पा रहे थे?
उत्तर:
शबरी श्रीराम के प्रेम में इतनी मग्न हो गई थी कि उसके मुँह से शब्द तक नहीं निकल पा रहे थे।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.
शबरी ने अपने आश्रम में श्रीराम का किस प्रकार स्वागत किया?
उत्तर:
शबरी ने अपने आश्रम में राम का प्रेमपूर्वक स्वागत किया। उसने आदर के साथ जल लेकर प्रभु के चरण पखारे तत्पश्चात् उन्हें सुन्दर आसन पर बैठाया।

प्रश्न 2.
द्वारपाल द्वारा वर्णित सुदामा का चित्र अपने शब्दों में लिखिए।
उत्तर:
द्वारपाल ने जाकर श्रीकृष्ण से कहा कि हे प्रभु! एक अनजान व्यक्ति आया हुआ है, उसके सिर पर न तो पगड़ी है, और न शरीर पर झंगा है। न मालूम वह किस गाँव का रहने वाला है। उसकी धोती फटी हुई है और उसका दुपट्टा भी जीर्ण-शीर्ण है। वह अपने पैरों में जूते भी नहीं पहने हुए हैं। बड़े आश्चर्य से आपके महलों को देख रहा है और अपना नाम सुदामा बता रहा है।

प्रश्न 3.
सुदामा द्वारा पोटली न दिये जाने पर कृष्ण ने कौन-सी बातें याद दिलाईं ?
उत्तर:
सुदामा द्वारा सुदामा की पत्नी द्वारा भेजे गये चार मुट्ठी चावलों की पोटली न दिये जाने पर कृष्ण ने कहा कि हे मित्र! तुम चोरी की कला में बचपन से ही निपुण हो। जब बचपन में गुरुमाता ने हमें चबाने के लिए चने दिये थे तो तुमने चुपचाप चोरी से खा लिये थे संभवत: तुम्हारी वही चोरी की आदत आज भी नहीं छूटी है तभी तो तुम भाभी द्वारा दिये गये चावलों की पोटली को काँख में छिपाए हए हो।

प्रश्न 4.
बिना भक्ति के मनुष्य की स्थिति किस प्रकार की हो जाती है?
उत्तर:
बिना भक्ति के मनुष्य की स्थिति जलरहित बादलों के समान होती है अर्थात् जैसे जलरहित बादल किसी काम में नहीं आते हैं उसी तरह भक्ति रहित मनुष्य भी संसार में किसी के काम नहीं आता है।

प्रश्न 5.
शबरी और राम प्रसंग सामाजिक समरसता का अनूठा उदाहरण है, समझाइए।
उत्तर:
शबरी निम्न जाति की भीलनी थी और राम चक्रवर्ती सम्राट दशरथ के पुत्र थे पर जब श्रीराम वन में शबरी के आश्रम पर पहुँचे तो उसके आतिथ्य को बड़े ही प्रेम से स्वीकारा। उसके द्वारा परोसे गये कन्द, मूल और फलों को प्रेम से खाया। उन्होंने जाति-पाँति का भेद न करके प्रेम को महत्त्व प्रदान किया। इस प्रकार शबरी और राम प्रसंग सामाजिक समरसता का अनूठा उदाहरण है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.
श्रीकृष्ण और सुदामा की मैत्री का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
उत्तर:
श्रीकृष्ण और सुदामा की मैत्री सच्ची थी। यह मैत्री बचपन में ही पाठशाला से शुरू होती है और जीवन भर चलती है। संयोग से कृष्ण द्वारिका के राजा बन जाते हैं और सुदामा दरिद्र बनकर भीख माँगकर अपना पेट पालता है। एक दिन सुदामा की पत्नी ने राजा श्रीकृष्ण के पास जाने की बात कही। पत्नी की बात मानकर सुदामा द्वारिका पहुँच जाते हैं। जब द्वारपाल के द्वारा सुदामा के आने की सूचना मिलती है, तो वे अपना राज-काज छोड़कर अपने मित्र का स्वागत करते हैं। मित्र सुदामा की दीन दशा देखकर वे अपने नेत्रों के आँसुओं से ही उनके पैर धो देते हैं। बिना सुदामा को बताये वे सुदामा को भी अपने समान सम्पन्न बना देते हैं।

https://www.evidyarthi.in/

प्रश्न 2.
सुदामा ने जब द्वारिका का वैभव देखा तो उनके मन में क्या विचार आए?
उत्तर:
सुदामा ने जब द्वारिका का वैभव देखा तो उनकी दृष्टि स्वर्ण निर्मित भवनों को देखकर चौंधिया गई। वहाँ उन्होंने देखा कि एक से बढ़कर एक द्वारिका के भवन हैं। वहाँ बिना पूछे कोई किसी से बात तक नहीं कर रहा है, ऐसा लगता है कि वहाँ के सभी लोग मौन साधकर देवताओं की तरह बैठे हुए हैं।

प्रश्न 3.
नवधा भक्ति समझाइए।
उत्तर:
श्रीराम ने भक्ति के नौ प्रकार बताए हैं, ये नौ प्रकार ही नवधा भक्ति के नाम से जाने जाते हैं। यह उपदेश श्रीराम ने शबरी को देते हुए कहा है कि प्रथम प्रकार की भक्ति संत पुरुषों की संगति है। दूसरी प्रकार की भक्ति मेरी कथा में प्रीति रखना है, तीसरी भक्ति गुरु के चरण कमलों की निरभिमान भाव से सेवा करना है। चौथी भक्ति कपट त्यागकर निश्छल हृदय से मेरा गुणगान करना है। पाँचवीं भक्ति मंत्रों का जाप करना, मुझ पर दृढ़ विश्वास करना और वेद विहित कर्म करना है।

छठी भक्ति इन्द्रियों को वश में रखना, शील धारण करना, सकाम कर्मों से विरक्त रहना और सज्जनों के धर्म का अनुसरण करना है। सातवीं प्रकार की भक्ति सारे संसार को मेरे स्वरूप में देखना, सब में समान भाव रखना तथा मुझसे भी अधिक सन्तपुरुषों को सम्मान देना है। आठवीं भक्ति जथा लाभ संतोष करना, स्वप्न में भी दूसरों के दोष न देखना है। नवीं भक्ति सबसे सरलता का व्यवहार करना, निष्कपट होना, मुझ पर अटूट श्रद्धा रखना, हृदय में प्रसन्नता का भाव रखना और स्वयं को दीनहीन न समझना है। आगे श्रीराम कहते हैं कि इन नौ प्रकार की भक्ति में से जिनके पास कोई एक भी हो, तो वह मनुष्य मुझे सम्पूर्ण संसार में प्रिय है।

प्रश्न 4.
निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए
(क) ऐसे बेहाल.....पग धोए।
उत्तर:
कवि कहता है कि जब श्रीकृष्ण ने सुदामा की दयनीय दशा को देखा तो वे भावविह्वल हो उठे। वे उनके पैरों की बिवाइयों एवं पैरों में चुभे हुए काँटों को देखकर दुःखी हो उठे और फिर उन्होंने अपने मित्र से कहा कि हे मित्र! तुमने इतना कष्ट उठाया? तुम इधर अर्थात् हमारे पास क्यों नहीं आए? इतने दिन तक तुम कहाँ रहे? सुदामा की इस दीन दशा को देखकर करुणा के सागर श्रीकृष्ण अत्यन्त दुःख करके रोने लगे। सुदामा के पैरों को धोने के लिए परात में रखे हुए पानी को तो उन्होंने हाथ भी नहीं लगाया तथा अपने नेत्रों से झरने वाले आँसुओं से ही सुदामा के चरण धो डाले।

काव्य सौन्दर्य

प्रश्न 1.
रूढ़, यौगिक और योगरूढ़ शब्द छाँटिए-
पंकज, मित्र, गुरुबंधु, दीनबंधु, धर, मुकुट, किनारीदार, राजधर्म।
उत्तर:
रूढ़ शब्द-मित्र, धर, मुकुट। यौगिक शब्द-गुरुबंधु, दीनबंधु, किनारीदार। योगरूढ़ शब्द-पंकज, राजधर्म।

प्रश्न 2.
दिये गये शब्दों में उपसर्ग और प्रत्यय छाँटिए-
सुशील, परलोक, अनाथन, अधीर, बेहाल, चतुराई।
उत्तर:
उपसर्ग – सु + शील, पर + लोक, अ + धीर, बे + हाल।
प्रत्यय – अनाथन (न प्रत्यय), चतुराई (आई प्रत्यय।)

प्रश्न 3.
निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिएसत्य, धर्म, प्रिय, सुलभ, सुमति, अहित, सुअवसर, संत।
उत्तर:
सत्य-असत्य, धर्म-अधर्म, प्रिय-अप्रिय, सुलभ-दुर्लभ, सुमति-कुमति, अहित-हित, सुअवसरकुअवसर, संत-दुष्ट, असंत।

प्रश्न 4.
निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए।
नभ, कमल, लोचन, जग, पिता।
उत्तर:
नभ – गगन, अम्बर, आकाश।
कमल – सरसिज, पंकज, वारिज।
लोचन – नेत्र, चक्षु, अक्षि।
जग – जगत्, संसार, लोक।
पिता – जनक; तात, पितृ।

प्रश्न 5.
ते दोउ बंधु.....तब कीन्हीं॥
चापत चरन.....जल जाता॥
उठे लषनु.....राम सुजान।
(1) यह प्रसंग किस काव्य से लिया गया है?
उत्तर:
उपर्युक्त तीनों प्रसंग गोस्वामी तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' से लिए गये हैं।

(2) 'रामचरितमानस' के उपर्युक्त अंश में कौन-से छन्द आये हैं?
उत्तर:
'रामचरितमानस' के उपर्युक्त अंश में से प्रथम दो में चौपाई छन्द तथा अन्तिम में दोहा छन्द है।

(3) चौपाई और दोहा छन्द की क्या पहचान है?
उत्तर:
चौपाई-यह एक मात्रिक छन्द है। इसमें चार चरण होते हैं और प्रत्येक चरण में 16-16 मात्राएँ होती हैं। पहले तुक चरण की दूसरे चरण से और तीसरे चरण की चौथे चरण से मिलती है।

दोहा-यह एक मात्रिक छन्द है। इसके विषम चरणों में 13-13 मात्राएँ और सम चरणों में 11-11 मात्राएँ होती हैं। कुल 48 मात्राएँ होती हैं।

https://www.evidyarthi.in/

प्रश्न 6.
इस पाठ में किन-किन छन्दों को तुलसीदास ने अपनाया है ? प्रत्येक छन्द का इसी पाठ से एक-एक उदाहरण लिखिए।
उत्तर:
इस पाठ में तुलसीदास ने दोहा एवं चौपाई छन्दों को अपनाया है। उदाहरण प्रस्तुत हैं-
चौपाई-
जाति-पाँति कुल धर्म बड़ाई। धनबल परिजन गुन चतुराई।
भगतिहीन नर सोहइ कैसा। बिनु जल वारिद देखिअ जैसा।

दोहा-
गुरु पद पंकज सेवा तीसरि भगति अमान।
चौथि भगति मम गुन गन करइ कपट तजि गान॥